भागवत में एक कबूतर की एक कहानी है। एक जंगल था जिसमें एक कबूतर रहता था। वह एक पारिवारिक पक्षी था। उसकी एक पत्नी थी जिसे वह अपने जीवन से अधिक प्यार करता था। पत्नी ने भी स्नेह और देखभाल के साथ पति के प्यार का जवाब देती थी। वह काफी मेहनती थी और दोनों ने परिवार को खुश रखा जिसमें उनके बच्चे भी शामिल थे। दिन बडे सुख से बीत रहे थे। बच्चे चंचल और खुश थे। प्यार भरा घर आनंद का अनुभव कर रहा था।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

लेकिन एक दिन उस जंगल में एक बहेलिया पहुंचा और कबूतर के बच्चे उसके जाल से फंस गए। उन्होंने रोना, चिखना चिल्लाना शुरू कर दिया, मां अपने बच्चों की स्थिति को देख न सकी और उनकी मदद करने के लिए चली गयी और वह वो भी शिकारी के जाल में फंस गयी। वे सब इंतजार कर रहे थे कि कबूतर मदद करने आयेगा लेकिन कबूतर को पता था कि अपने परिवार को बचाना उसकी क्षमता से परे था। कबूतर के दुःख का कोई अंत नहीं था। उसके प्रियजन उसे छोडकर प्रस्थान कर रहे थे। पत्नी और बच्चे चिल्ला रहे थे लेकिन कबूतर असहाय था। उसके प्रियजनों को बलपूर्वक दूर ले जाया गया था, जिससे उसका दिल तूट गया। अपना शेष जीवन वो कबुतर दुःख में विलाप करता रहा।

भागवत आगे कहती है कि पारिवारिक मनुष्य जो अपने कुटुंब, मित्र आदि से प्यार करता है वो उसी कबूतर के समान मूर्ख हैं। क्योंकि मनुष्य जानता है कि मृत्युरुपी शिकारी अपने प्रियजनों को दूर कर देगा। अपना पूरा तन, मन, धन एवं जीवन को उस जगह पर दाँव पर लगाना सबसे बडी बेवकूफी है जहां नुकसान तथा

विनाश निश्चित है। आखिरकार कोई भी इस बात क्यों नहीं सोचता कि उन व्यक्तियों और वस्तुओं के पीछे जाने में तथा संग्रह करने में कोई समझदारी नहीं है जिनका एक दिन छुटना निश्चित हैं। जीवन रुपी नौका पर मनुष्य इंद्रियोंके सुख के पीछे दिवाना है। सब भुले हुए है कि वे जिस नाव पर सवार है उसका डूबना तय है।

यही कारण है कि युधिष्ठिर ने कहा था, 'इस धरती पर सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि हर कोई देखता है कि कई लोग रोज स्मशान घाट जा रहे हैं, फिर भी अन्य लोग मृत्यु के भुले हुए जीवित हैं जैसे कि वे कभी मर नहीं जाएंगे।'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

मृत्यु पर चिंतन इस जीवन की संक्षिप्तता एवं क्षणभंगुरता को उजागर करता है और फिर संभावना है कि व्यक्ति इस मृत्यु की अपरिहार्य स्थिति से बाहर आने के तरीकों और साधनों की तलाश करेगा तथा आध्यात्मिक मार्ग से श्रीकृष्ण मिलन की बात सोचेगा।